# मंगलायतन विश्वविद्यालय में जैनदर्शन के पाठ्यक्रम

मंगलायतन विश्वविद्यालय में जैन दर्शन में विभिन्न नियमित पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

मास्टर ऑफ आर्ट्स - जैनदर्शन (दो वर्ष), योग्यता - बेचलर डिग्री

बेचलर ऑफ आर्ट्स - जैनदर्शन (तीन वर्ष), योग्यता - 10+2

बेचलर ऑफ आर्ट्स - जैनदर्शन सहित हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत (तीन वर्ष), योग्यता- 10+2

बेचलर ऑफ कॉमर्स - जैनदर्शन सहित (तीन वर्ष), योग्यता - 10+2

डिप्लोमा - जैनदर्शन (एक वर्ष), योग्यता - 10+2

प्रमाण-पत्र - जैनदर्शन (छह माह), योग्यता - 10

पीएच.डी. - जैनदर्शन (तीन-पाँच वर्ष), योग्यता - मास्टर

सर्टिफिकेट कोर्स की फीस रु. 3 हजार, डिप्लोमा/बी.ए. रु.6 हजार प्रतिवर्ष, बी.ए. एवं बी.कॉम. जैनदर्शन के साथ रु. 12 हजार प्रतिवर्ष, एम.ए. रु. 10 हजार, पीएच.डी. रु. 40 हजार। परीक्षा व फार्म फीस अतिरिक्त रु. 1 हजार। छात्रवृत्ति की संभावना - कुछ संस्थाओं /व्यक्तियों ने नियमित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रवेश लेने वालों को छात्रवृत्ति देने की सहमति दी है। हिन्दी या अंग्रेजी माध्यम में से एक विकल्प चुन सकते हैं। प्रवेश के लिये सभी पाठ्यक्रमों में 45 प्रतिशत और पीएच.डी. के लिये 55 प्रतिशत अंक अनिवार्य है। अधिक जानकारी के लिये **संपर्क करें -** दर्शन विज्ञान केन्द्र, मंगलायतन विश्वविद्यालय, 33, माइलस्टोन, अलीगढ-मथुरा हाईवे, बेसवा, अलीगढ-202145 मोबाईल - 07351002565/08476007937

**E-mail : jl.jain@mangalayatan.edu.in,**
**cps@mangalayatan.edu.in; website : www.mangalayatan.edu.in**

**श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई**
**द्वारा संचालित**

**ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में**

## 36 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

**( दिनांक 4 अगस्त से 13 अगस्त, 2013 तक )**

**इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के अतिरिक्त अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।**

**आप सभी सादर आमंत्रित हैं।**




# वीतराग-विज्ञान

**वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।**
**वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।**

वर्ष : 32 (वीर नि. संवत् - 2539) 361 अंक : 1


## नरदेही को धरी तौ...

**नरदेहीको धरी तौ कछू धर्म भी करो।**
**विषयों के संग राचि क्यों, नाहक नरक परो।।टेक।।**
**चौरासी लाख जौनि तैंनै, केई बार धरी।**
**तू निजसुभाव पागिकै, पर त्याग ना करी।।नर. ।।1।।**
**तू आन देव पूजता है, होय लोभ में।**
**तू जान-बूझ (पूछ) क्यों परै, हैवान कूप में।।नर. ।।2।।**
**है धनि नसीब तेरा जन्म, जैनकुल भया।**
**अब तो मिथ्यात छोड़ दे, कृतकृत्य हो गया।।नर. ।।3।।**
**पूरवजनम में जो करम, तूने कमाया है।**
**ताके उदैको पायके, सुख दुःख आया है।।नर. ।।4।।**
**भला बुरा मानैं मती, तू फेरि फँसैगा।**
**'बुधजन' की सीख मान, तेरा काज सधैगा।।नर. ।।5।।**

**- कविवर पण्डित बुधजनजी**

छहढाला प्रवचन

## 8 अंग सहित सम्यक्त्व

**जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।**
**मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै।।**
**निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।**
**कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज पर को सु दिढ़ावै।।१२।।**
**धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिनधर्म दिपावै।**
**इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै।।**

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

**(गतांक से आगे....)**

### ८. प्रभावना अंग का वर्णन

जिनमार्ग द्वारा अपने ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मा को जानकर उसकी 'प्रभावना' अर्थात् उत्कृष्ट भावना तो धर्मी करते ही हैं और व्यवहार में भी ऐसे जिनमार्ग की महिमा जगत में कैसे प्रसिद्ध हो और संसारी जीव धर्म कैसे प्राप्त करें - ऐसी प्रभावना का भाव धर्मी को होता है। वह अपनी पूर्ण शक्ति से, ज्ञान-विद्या-वैभव-तन-मन-धन-दान-शील-तप आदि से धर्म की प्रभावना करता है। किसी विशेष शास्त्र द्वारा, तीर्थ द्वारा, उत्तम जिनमंदिर द्वारा तथा अनेक महोत्सवों द्वारा भी प्रभावना करता है, वर्तमान में तो जीवों को सच्चा तत्त्वज्ञान प्राप्त हो - ऐसी प्रभावना की विशेष आवश्यकता है। कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने समयसार आदि अध्यात्मशास्त्रों की रचना द्वारा जिनशासन की महान प्रभावना की है और लाखों जीवों पर उपकार किया है। समन्तभद्रस्वामी, अकलंकस्वामी आदि ने भी जैनधर्म की महान प्रभावना की है।

धर्म पर संकट आने पर धर्मी जीव बैठा नहीं रहता। जिसप्रकार शूरवीर योद्धा





युद्ध में छिपा नहीं रहता, उसीप्रकार धर्मात्मा धर्मप्रसंग में छिपता नहीं है; धर्मप्रभावना के कार्यों में वह उत्साह से अपने आप भाग लेता है। देव-गुरु-शास्त्र के कार्यों में, तीर्थों के कार्य में, साधर्मीजनों के कार्य में अपनी शक्ति अनुसार उमंगपूर्वक वर्तता है। ऐसा शुभभाव धर्मी को होता है, तथापि उसकी मर्यादा भी जानता है कि यह राग मोक्ष का साधन नहीं है। राग द्वारा मुझे तथा दूसरों को लाभ नहीं होगा। इसलिए उसे राग की भावना नहीं; परन्तु वीतरागीमार्ग की प्रभावना और पुष्टि की ही भावना होती है। अहा, ऐसा सुन्दर वीतरागमार्ग और ऐसे मार्ग की साधना करने वाले ये मेरे साधर्मी भाई ! इसप्रकार अपने साधर्मी भाई-बहिनों के प्रति उमंग आती है। वह साधर्मी का अपवाद नहीं होने देता। वाह, देखो तो सही! अन्तर दृष्टिपूर्वक वीतरागमार्ग में व्यवहार का भी कितना विवेक है।

जो अन्तर में यथार्थ मार्ग की प्रतीति करे, उसे ही ऐसा व्यवहार समझ में आता है। सम्यक्त्व के इन आठ अंगों द्वारा धर्मी जीव अपने में वीतरागमार्ग की पुष्टि करते हैं और सर्वप्रकार से उसकी प्रभावना करते हैं। प्रभावना अंग के लिए वज्रमुनि का उदाहरण शास्त्रों में प्रसिद्ध है। इसप्रकार सम्यक्त्व के आठ अंग कहे। ऐसे आठ गुणों सहित शुद्ध सम्यक्त्व की आराधना करो और उनसे विरुद्ध शंकादि आठ दोषों का त्याग करो।

सम्यग्दृष्टि को ही मार्ग की सच्ची प्रभावना होती है। जिसने धर्म का सच्चा स्वरूप जाना है, वही उसकी प्रभावना कर सकता है। जो धर्म को पहिचानता ही नहीं, वह प्रभावना किसकी करेगा ? अहा, जिनमार्ग कोई अद्भुत अलौकिक है, इन्द्र-चक्रवर्ती और गणधर भी जिसका भक्ति से आदर करते हैं - ऐसे वीतराग मार्ग की क्या बात ! ऐसा मार्ग और उसका आदर करने वाले साधर्मियों का योग मिलना बहुत दुर्लभ है। ऐसे मार्ग को प्राप्त कर अपना हित कर लेना चाहिए। जितना रागभाव है, उसे धर्मी अपने स्वात्मकार्य से भिन्न जानता है और निश्चय सम्यक्त्वादि वीतरागभाव को ही स्वधर्म जानकर उसका आदर करता है। धर्म का ऐसा स्वरूप समझकर उसकी प्रभावना करता है।

जो केवल व्यवहार के शुभ विकल्पों को ही धर्म मान लेते हैं और राग रहित निश्चय धर्म को नहीं समझते, उन्हें तो अपने में किंचित् भी धर्म नहीं होता अर्थात् उन्हें सच्ची धर्मप्रभावना भी नहीं होती। अपने में धर्म हो तो उसकी प्रभावना करे ?

यहाँ तो अन्तर में अपने शुद्धात्मा का अनुभव करके निश्चयधर्म सहित के व्यवहार की बात है। अरे, वीतराग के सत्यमार्ग को भूलकर अज्ञान द्वारा कुमार्ग के सेवन द्वारा जीव अपना अहित कर रहे हैं, वे ज्ञान द्वारा सच्चा मार्ग प्राप्त करें और अपना हित करें - ऐसी भावना से धर्मी जीव ज्ञान के प्रचार द्वारा सत्यधर्म की प्रभावना करते हैं। उन्होंने स्वयं सत्यमार्ग को जाना है; इसलिये उसकी प्रभावना करते हैं।

आत्मा परद्रव्यों से भिन्न, शान्त-वीतराग-चिदानन्दस्वभावरूप है, उसे पहिचान कर उसमें 'यही मैं हूँ' - ऐसा भाव ही निश्चय सम्यग्दर्शन है।

शरीर-मन-वाणी तथा राग-द्वेष से पार होकर, अन्तर में अपने शुद्ध एकत्वस्वरूप में स्वसन्मुख दृष्टि करने पर सम्यग्दर्शन होता है, वह मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ी है, वहीं से मोक्षमार्गरूप धर्म का प्रारंभ होता है। जन्म-मरण के नाश के उपाय में प्रथम ही सम्यग्दर्शन है; इसके अतिरिक्त समस्त जानपना और समस्त क्रियाएँ निरर्थक हैं। किसी पुण्य से - शुभराग से ऐसा सम्यग्दर्शन नहीं होता; अन्तर में शुद्धतत्त्व है, उसे ज्ञान में - अनुभव में लेकर निःशंक श्रद्धा करने पर सम्यग्दर्शन प्रगट होता है। ऐसे निश्चय सम्यग्दर्शन के साथ सच्चे देव-गुरु-धर्म की तथा नवतत्त्व की पहिचान करायी है तथा निःशंकितादि आठ गुण आदि व्यवहार कैसा होता है, वह बतलाया है। ऐसा जानकर मुमुक्षु जीवों को आठ अंग सहित शुद्ध सम्यक्त्व को धारण करना चाहिए। **(क्रमशः)**

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -**
**वेबसाईट - www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com**





**नियमसार प्रवचन -**

## जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 47वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलतः इसप्रकार है -

**जारिसिया सिद्धप्पा भवमल्लिय जीव तारिसा होंति।**
**जरमरणजम्ममुक्का अट्ठगुणालंकिया जेण ।।४७।।**

( हरिगीत )

**गुण आठ से हैं अलंकृत अर जन्म-मरण-जरा नहीं।**
**हैं सिद्ध जैसे जीव त्यों भवलीन संसारी कहे।।४७।।**

जैसे सिद्ध आत्मा हैं, वैसे भवलीन (संसारी) जीव हैं, जिससे (वे संसारी जीव सिद्धात्माओं की भाँति) जन्म-जरा-मरण से रहित और आठ गुणों से अलंकृत हैं।

**(गतांक से आगे ...)**

**ज्ञानीजीव चैतन्यस्वरूप शुद्धात्मा का आदर करता है और अज्ञानीजीव विकार तथा व्यवहार को श्रेष्ठ समझकर उनका आदर करता है।**

जैसे सिद्ध शुद्धात्मायें हैं, वैसे ही शुद्ध निश्चयनय से भववाले (संसारी) जीव हैं। संसारी की विकारी पर्याय तथा सिद्ध की व्यक्त मोक्षपर्याय है। यदि इनकी पर्याय को गौण करके देखा जाय तो संसारी जीव भी सिद्धसदृश हैं, शुद्धनिश्चयनय से इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है। सोने में एक बान ताँबा का भाग मिल जाने से सोना पन्द्रह बान का कहा जाता है, किन्तु यदि ताँबे के भाग का विचार न करें तो सोना सोलह बानवाला सोना ही है। बाजार में सोना लेने जाय तो उसमें मिले हुए ताँबे का पैसा कोई नहीं देता, केवल सोने का ही पैसा देता है, यदि देवे तो मूर्ख कहा जाय। वैसे ही संसारदशा में तथा दया-दानादि काम-क्रोध विकार के भाव ताँबा समान ही हैं, उनकी कीमत देवे और उनसे महानता माने वह मूर्ख है।

अज्ञानी जीव व्यवहार की, निमित्त की, पुण्य-पाप की कीमत देता है, वह अपने आत्मा को नहीं मानता, देव-शास्त्र-गुरु को भी नहीं मानता। ज्ञानी जीव समझता है कि अपना चैतन्यस्वरूप ही महान है, उसकी महानता के आगे अन्य कोई महान नहीं। इसप्रकार अपने ज्ञायक स्वभाव को सिद्धसमान समझने वाला जीव धर्मदशा को प्राप्त होता है।

**शुद्धनिश्चयनय से संसारी जीव जन्म-जरा-मरण से रहित हैं और सम्यक्तवादि आठ गुणों की पुष्टि से तुष्ट हैं।**

जैसे वे संसारी जीव सिद्धात्माओं जैसे हैं, वैसे ही वे जन्म-जरा-मरण से रहित और सम्यक्त्वादि आठ गुणों की पुष्टि से तुष्ट हैं, सम्यक्त्व-अनंतज्ञान-अनंतदर्शन-अनंतवीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व और अव्याबाध - इन अष्टगुणों की समृद्धि से आनन्दमय हैं।

शुद्धनिश्चयनय से विकार को गौण करके संसारी जीव को सिद्धसमान कहा था, उसी दृष्टि से देखा जाय तो संसारी जीव को जन्म, मरण व बुढापा नहीं होता तथा उसी दृष्टि से वह सम्यक्त्वादि आठ गुणों की समृद्धि से आनन्दमय हैं। परवस्तु का आत्मा में त्रिकाल अभाव है, एकसमयमात्र के विकार अर्थात् अपूर्ण पर्याय को गौण करके अभूतार्थ कहकर त्रिकाली भूतार्थ शुद्धस्वभाव में उसका अभाव बताया है - द्रव्यदृष्टि कराई है।

ये सब आत्मा की बात चल रही है, स्वपर-ज्ञायकस्वभाव एकरूप विद्यमान है, भूल के समय भी शुद्ध स्वभाव तो ज्यों का त्यों है और भूल टालकर सिद्ध हो जाय तब भी शुद्ध-ज्ञायकस्वभाव वही का वही है। शुद्धदृष्टि होने पर विकार तथा अपूर्ण पर्याय पर दृष्टि नहीं रहती - यही धर्म का कारण है।

मेरा रूप चेतन है, वह उपचार रहित है तथा मेरा पद सदा सिद्धसमान है, ऐसी दृष्टि करना ही धर्म का कारण है।

**विद्यमान विकारी पर्याय को अविद्यमान (गौण) करके, अविद्यमान निर्मल पर्याय को विद्यमान करना (प्रगट करना) ही धर्म है।**

संसारदशा में रहनेवाले जीव विकार पर्याय में विद्यमान होने पर भी उन विकारों





को अविद्यमान करना और अविद्यमान त्रिकाली शुद्धस्वभाव को श्रद्धा में लेकर विद्यमान करना धर्म का कारण है। जो पुण्य-पाप को तो विद्यमान रहने देता है और स्वभाव को ढँककर रखता है वह संसार में रहता है; अतः जिसे धर्म करना हो उसे विकार को ढँका कर स्वभाव को श्रद्धा-ज्ञान में लेना चाहिये। जो परमात्मा हुए हैं, वे आत्मा में से हुए हैं। प्राप्त की ही प्राप्ति होती है।

परम शक्ति कहाँ से प्रगट हुई? जहाँ होगी वहीं से तो आयेगी? विद्यमान भाव में से ही आयेगी, अविद्यमान अथवा अभाव में से नहीं आयेगी। अतः जो शक्ति भरी पड़ी है उसकी श्रद्धा-ज्ञान करने से सम्यग्दर्शन-ज्ञान प्रगट होता है और उसमें लीनता करने से चारित्र दशा प्रगट होकर शुक्लध्यानपूर्वक केवलज्ञान और सिद्धदशा प्राप्त होती है।

जैसे सिद्ध भगवान हैं वैसे ही संसारी जीव शक्तिरूप से हैं। संसारदशा में होने वाला विकार एकसमय का है, दो समय का विकार कभी एकत्र नहीं होता। जो जीव विकार को मुख्य करे तो स्वभाव का अनादर हो जाता है और त्रिकाली स्वभाव को मुख्य करे, एक-समय के विकार को गौण करे तो धर्मदशा प्रगट होती है।

यह शुद्धभाव अधिकार है, शुद्धभाव एकरूप अनादि-अनन्त है, उसकी श्रद्धा-ज्ञान करने से धर्मदशा प्रगट होती है। त्रिकाली शुद्धभाव से संसारी और सिद्ध में समान है, कोई अन्तर नहीं है - यह बात गाथा ४७ में बताई है।

अब ४७वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्लोक कहते हैं-

( अनुष्टुप् )

**प्रागेव शुद्धता येषां सुधियां कुधियामपि।**
**नयेन केनचित्तेषां भिदां कामपि वेद्म्यहम् ।।७१।।**

( दोहा )

**पहले से ही शुद्धता जिनमें पाई जाय।**
**उन सुधिजन कुधिजनों में कुछ भी अंतर नाय॥**
**किस नय से अन्तर करूँ उनमें समझ न आय।**
**मैं पूँछूँ इस जगत से देवे कोई बताय॥७१॥**

जिन सुबुद्धियों तथा कुबुद्धियों को पहले से ही शुद्धता है, उनमें कुछ भी भेद मैं किस नय से जानूँ ? अर्थात् वास्तव में उनमें कुछ भी भेद अथवा अंतर नहीं है।

**सुबुद्धि और कुबुद्धि की पर्याय में अन्तर है, उनका त्रिकाली स्वभाव तो एकरूप शुद्ध है, उस शुद्धभाव के ऊपर ही दृष्टि कर।**

सुबुद्धि अर्थात् सम्यग्दृष्टि; जो जीव वस्तु का स्वरूप यथार्थ समझता है अर्थात् शरीरादि पर हैं, एकसमय का विकार पर्याय में होता है, वह मेरा स्वरूप नहीं है, विकार के कारण द्रव्यकर्म का बन्ध होता है, ऐसा निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध पर्याय में है, शुद्धस्वभाव में ऐसा सम्बन्ध नहीं है, मैं तो त्रिकाली ज्ञायक शुद्ध हूँ - ऐसा जिसको भान हुआ है, उसे सुबुद्धि कहते हैं, उसी को सच्ची बुद्धि उत्पन्न हुई है। जीव का मूलस्वभाव-शुद्धभाव तो जैसा का तैसा ही शुद्ध है, वह नया शुद्ध नहीं हुआ है।

कुबुद्धि अर्थात् मिथ्यादृष्टि; जो जीव वस्तु का स्वरूप नहीं समझता और पर तथा एकसमय के विकार से लाभ मानता है और त्रिकाली स्वभाव को नहीं समझता, वह कुबुद्धि है। उसका त्रिकाली स्वभाव तो जैसे का तैसा शुद्ध पड़ा है।

सुबुद्धि की एकसमय की पर्याय को तथा कुबुद्धि की एकसमय की मिथ्यात्व पर्याय को गौण करके देखा जावे तो दोनों के स्वभाव में कोई भेद नहीं है; एकरूप शुद्धभाव पड़ा है। सोने में ताँबे का मिश्रण हो, तब भी सोना तो सोना ही है और ताँबे को उसमें से निकाल देने पर भी सोना तो सोना ही है। उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि हो अथवा मिथ्यादृष्टि - दोनों का स्वभाव तो शुद्ध ही है, उनके स्वभाव में सचमुच कोई अन्तर नहीं है।

यहाँ द्रव्यदृष्टि कराते हैं; धर्म प्रगट होने का कारण कौन है? धर्म अथवा आनन्द विकार में से अथवा पर्याय में से नहीं आता; अपितु अस्तिरूप वस्तुस्वभाव में से आता है, अतः पर्याय के ऊपर का लक्ष्य छोड़। अनन्तकाल से अज्ञान का सेवन करके सत् का विरोध किया हो तो वह भी पर्याय में ही हुआ है और कोई सिद्ध हुआ हो तो वह भी पर्याय में ही हुआ है; अतः दोनों ही पर्यायों का लक्ष्य छोड़कर निगोद और सिद्ध स्थित एकरूप शुद्धभाव के ऊपर दृष्टि कर। शुद्ध कारणस्वभावभाव ही धर्म का कारण है। **(क्रमशः)**





# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

**प्रश्न :** 'परमात्मप्रकाश' में परमात्मा के ध्यान करने को धर्म-ध्यान कहा है - वह कैसे ?

**उत्तर :** परमात्मा का ध्यान करने को कहकर अपने ही आत्मा का ध्यान करने को कहा है, अपने से भिन्न परमात्मा का नहीं। परमात्मा के समान ही अपना स्वभाव परिपूर्ण रागादि रहित है, उसको पहिचानकर उसका ही ध्यान करना - यही परमार्थ से परमात्मा का ध्यान है। इसके अतिरिक्त अरहन्त व सिद्ध का लक्ष्य करना सच्चा धर्मध्यान नहीं है, किन्तु राग है और परमार्थ से राग तो आर्त्तध्यान है; अतः उससे कभी भी धर्मध्यान नहीं हो सकता।

**प्रश्न :** स्थिरता (चारित्र) को निकट का उपाय क्यों कहा ?

**उत्तर :** क्योंकि सम्यग्दर्शन-ज्ञान भी मोक्ष का उपाय है, परन्तु सम्यग्दर्शन-ज्ञानपूर्वक स्थिरता मोक्ष का साक्षात् उपाय है। इसीकारण स्थिरता को मोक्ष का निकट का उपाय कहा। सम्यग्दर्शन-ज्ञान के पश्चात् भी स्वरूप में स्थिरता के बिना मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

**प्रश्न :** स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा में कहा है कि जिनवचन की भावना के लिए इन भावनाओं की रचना की है - इसका क्या अर्थ है ?

**उत्तर :** पहले 'जिनवचन क्या है'- यह निर्णय करना पड़ेगा। जिनवचन में कहे गए द्रव्य-गुण-पर्याय - इन तीनों का स्वरूप जैसा है, वैसा समझकर और प्रतीति करके धर्मी जीव इन भावनाओं को भाता है, उसमें उसको वीतरागी श्रद्धा, वीतरागी ज्ञान और वीतरागी आनन्द का अंश प्रगट होता है। जिनवचन की भावना के अर्थ ये भावनाएँ रची हैं अर्थात् जिनवचनानुसार वस्तुस्वरूप का भान जिसे हुआ हो, उसे ही ये भावनाएँ होती हैं। जिनवचन से विरुद्ध कहने वाले कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्र को जो मानता हो; उसको बारह भावनाओं का चिन्तवन सच्चा नहीं होता। सम्यग्दर्शन बिना भावनाएँ यथार्थ नहीं होती।

**प्रश्न :** संसारभावना का अर्थ क्या संसार की भावना करना है ?

**उत्तर :** नहीं; संसारभावना में संसार की भावना या रुचि नहीं है; रुचि और भावना तो स्वभाव की ही है। धर्मी जीव अपने स्वभाव की दृष्टि रखकर संसार का स्वरूप चिन्तवन करके वैराग्य की वृद्धि करता है, इसका नाम संसार भावना है। अन्तर्तत्त्व के भान बिना द्वादश-भावना यथार्थ नहीं होतीं।

**प्रश्न :** मोक्ष का कारण समभाव है। वह समभाव करें तो मोक्ष होगा न ?

**उत्तर :** समभाव अर्थात् वीतरागता। यह वीतरागता द्रव्य को पकड़े तब हो। द्रव्य के आश्रय बिना वीतरागता नहीं होती। समभाव का कारण वीतरागस्वभावी भगवान आत्मा है, उसका आश्रय करने और पर का आश्रय छोड़ने से मोक्ष होता है। यह अति संक्षिप्त कथन है।

**प्रश्न :** त्याग जैनधर्म है कि नहीं ?

**उत्तर :** सम्यग्दर्शनपूर्वक जितने अंश में वीतराग भाव प्रकट हो, उतने अंश में कषाय का जो त्याग होता है, उसे धर्म कहते हैं। सम्यग्दर्शनादि अस्तिरूप धर्म है और उसीसमय मिथ्यात्व और कषाय का त्याग नास्तिरूप धर्म है। किसी भी दशा में सम्यक्त्व रहित त्याग से धर्म नहीं होता, यदि मन्दकषाय हो तो पुण्य होता है।

**प्रश्न :** आत्मा की क्षमा कैसे होती है ?

**उत्तर :** अनन्तगुणमय-ज्ञानानन्दमय आत्मा का स्वरूप पहचानने से आत्मा की क्षमा होती है। आत्मा में कोई विभाव नहीं - वह तो क्षमा का सागर, शान्ति का सागर है। यद्यपि अनन्तकाल में अनन्तभाव हुए, निकृष्ट से निकृष्ट भाव भी हुए, तथापि आत्मा तो क्षमा का भण्डार है - उसे पहचानने से ही सच्ची क्षमा होती है।

**प्रश्न :** अहिंसा को परमधर्म कहा है, उसका अर्थ क्या ?

**उत्तर :** परजीवों की दया का भाव तो राग है और राग से स्व की हिंसा होती है तथा राग से लाभ मानने में चैतन्य प्रभु का अनादर है। जिस अहिंसा को परम धर्म कहा है, वह तो आत्मा की पर्याय में रागादि की उत्पत्ति ही न होवे - वह है, वही वीतरागी अहिंसा धर्म है। पुरुषार्थसिद्ध्युपाय गाथा 44 में कहा कि आत्मा में रागादि की अनुत्पत्ति ही अहिंसा और उनकी उत्पत्ति होना ही हिंसा है। ऐसी बात पात्र जीव के बिना किसे रुचे ?





समाचार दर्शन -

# अमेरिका आदि देशों में तत्त्वज्ञान की धूम

अमेरिका आदि पाश्चात्य देशों के अनेक शहरों में गुरुदेवश्री से प्राप्त आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान को सुनने वाले सैंकड़ों गहन अभ्यासी आज आत्मकल्याण के मार्ग पर लगे हुये हैं। वहाँ के प्रचुर भौतिक संसाधनों से युक्त वातावरण में जल से भिन्न कमलवत् रहते हुए कुछ लोग जब द्रव्य-गुण-पर्याय, सम्यग्दर्शन, अभेद अखण्ड आत्मा की निर्विकल्प अनुभूति की सूक्ष्म गहन चर्चा करते हैं तो स्पष्ट प्रतिभासित होता है कि क्षेत्र, काल और परिस्थितियाँ इस जीव की साधना में बाधक नहीं हैं।

आज अमेरिका, कनाडा, मलेशिया, सिंगापुर, इंग्लैण्ड आदि अनेक देशों में भी वर्षभर प्रतिदिन स्वाध्याय करना लोगों की दिनचर्या का अभिन्न अंग बन गया है। अनेक अभ्यासी मुमुक्षु तो ऐसे हैं, जिन्होंने अपने जीवन में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को देखा भी नहीं है तथा अनेक तो ऐसे भी हैं, जो आज तक कभी भारत में ही नहीं आये हैं।

विशिष्ट क्षयोपशम के धनी तर्कशील लोगों में आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान के प्रति यह रुचि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा किये गये 31 वर्षों के अथक् प्रयासों का ही सुपरिणाम है।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी **दिनांक 14 जून से 23 जुलाई तक डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के न्यूयॉर्क, डलास, शिकागो, डेट्रोइट, लॉस एन्जिल्स, सिंगापुर, क्वालालम्पुर (मलेशिया) आदि अनेक शहरों में अध्यात्मरस गर्भित मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही **पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा दिनांक 30 मई से 5 जुलाई** तक डलास, शिकागो, मियामी, टोरंटो (कनाडा) एवं डेट्रोइट में हुये जिनागम के विविध सूक्ष्म विषयों पर

सारगर्भित प्रवचनों का श्रोताओं ने भरपूर लाभ लिया। इसके अतिरिक्त गहन विषयों पर गंभीर तत्त्वचर्चा तथा डलास में सामूहिक पूजन एवं टोरंटो (कनाडा) में शान्ति विधान का भी आयोजन किया गया।

इस वर्ष डेट्रोइट में आयोजित 'जाना शिविर' एवं 'जैना कन्वेन्शन' में विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई के मार्मिक प्रवचनों के आकर्षक प्रस्तुतिकरण ने श्रोताओं का मन मोह लिया।

### डेट्रोइट में आयोजित हुआ JAANA शिविर -

जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (**JAANA**) द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 13वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दि. 30 जून से 4 जुलाई तक डेट्रोइट में आयोजित हुआ।

शिविर का विधिवत् शुभारम्भ नित्यनियम पूजन के पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचन से हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार के ज्ञेयतत्त्व प्रज्ञापन की प्रारंभिक गाथाओं पर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के दोनों समय द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक नयों पर एवं विदुषी स्वानुभूति जैन के दोनों समय समयसार की गाथा 31 से 33 तक प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन सायंकाल शंका-समाधान (ज्ञान गोष्ठी) का कार्यक्रम आयोजित किया जाता था, जिसमें तीनों विद्वानों के माध्यम से उपस्थित जनसमुदाय की शंकाओं का समाधान होता था। कार्यक्रम में श्रोताओं द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों से उनकी तत्त्व की सूक्ष्म पकड़ स्पष्ट परिलक्षित होती थी।

शिविर में अमेरिका एवं कनाडा के विभिन्न नगरों से पधारे लगभग 100-125 आत्मार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

## दशलक्षण पर्व हेतु सुनिश्चित विद्वान

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर निम्न विद्वानों का स्थान सुनिश्चित हुआ है, जो निम्नानुसार है-

| | | |
|---|---|---|
| (1) डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल | - | इन्दौर (म.प्र.) |
| (2) ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना | - | बेलगांव (कर्नाटक) |
| (3) पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली | - | दिल्ली (विश्वासनगर) |
| (4) ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली | - | नागपुर (महा.) |
| (5) पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर | - | वस्त्रापुर-अहमदाबाद (गुज.) |
| (6) पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर | - | शिकागो (अमेरिका) |
| (7) संजयजी शास्त्री अलीगढ | - | मुम्बई (सीमन्धर जिनालय) |
| (8) पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया | - | इन्दौर (साधना नगर) |
| (9) डॉ. दीपकजी जैन जयपुर | - | गजपंथा-नासिक (महा.) |





# देशभर में शिक्षण शिविरों की धूम

**ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर मई एवं जून माह में पूरे देशभर में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। इन शिविरों के अन्तर्गत पिड़ावा के नेतृत्व में 121, दिल्ली के नेतृत्व में 27, भिण्ड के नेतृत्व में 76 व नागपुर के नेतृत्व में 28 स्थानों पर ग्रुप शिविर एवं औरंगाबाद, अजमेर, भिण्ड व उदयपुर में बाल एवं युवा संस्कार शिविर लगाये गये। इन ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के द्वारा हजारों बालकों ने जैनधर्म के सिद्धान्तोंका ज्ञान प्राप्त किया।**

**1. पिड़ावा (राज.) :** यहाँ कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के तत्त्वावधान में **दिनांक 26 मई से 2 जून तक राजस्थान व मालवा प्रान्त के 121 स्थानों पर सामूहिक शिविर लगाया गया।**

शिविर में ज्ञानगंगा प्रवाहित करने हेतु टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन मंगलायतन, आचार्य धरसेन जैन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा एवं आचार्य अकलंक जैन सिद्धान्त महाविद्यालय बांसवाड़ा के विद्यार्थियों का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ।

यह शिविर राजस्थान के झालावाड़, कोटा, बूंदी, अजमेर, उदयपुर, चित्तौड़गढ जिलों में तथा मध्यप्रदेश के उज्जैन, गुना, मन्दसौर आदि जिलों के 121 स्थानों पर आयोजित किया गया।

लगभग सभी स्थानों पर बालबोध पाठमाला, छहढाला, जैनसिद्धांत प्रवेशिका आदि विषयों पर कक्षायें ली गईं। इसके अतिरिक्त पूजन प्रशिक्षण, जिनेन्द्र-भक्ति, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रथमानुयोग पर आधारित चित्रकला, जिनवाणी सज्जा आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस सभी कार्यक्रमों के माध्यम से बालकों को जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान कराया गया। अन्तिम दिन परीक्षा एवं पुरस्कार वितरण भी किया गया।

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की पिड़ावा शाखा एवं मुमुक्ष मण्डल पिड़ावा द्वारा संचालित इस ग्रुप शिविर में हजारों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

संपूर्ण शिविर का निर्देशन पण्डित नागेशजी पिड़ावा ने किया।

**2. दिल्ली :** यहाँ श्री दि. जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मन्दिर ट्रस्ट एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन विश्वास नगर के तत्त्वावधान में **दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के 27 स्थानों पर दिनांक 16 से 23 जून तक जैन जागृति शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।**

इस अवसर पर डॉ. सुदीपजी जैन, डॉ. वीरसागरजी जैन, डॉ. अशोकजी गोयल, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री के अतिरिक्त श्री टोडरमल

दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन मंगलायतन के विद्वानों एवं कन्या विद्या निकेतन दिल्ली की छात्राओं द्वारा शिविर में ज्ञानगंगा प्रवाहित करने का कार्य किया गया।

ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रेरित यह शिविर विश्वास नगर, रघुवरपुरा, अशोका एन्क्लेव, पीरागढी, बुद्धविहार व गाँधी चौक बहादुरगढ हरियाणा, छाछी बिल्डिंग कृष्णानगर, साधनगर, न्यू उस्मानपुर, शिवाजी पार्क, पालम गाँव, इन्दिरापुरम, गाजियाबाद, बड़ौत, बागपत, खेकड़ा, काँधला, सरवना, तीरगरान मेरठ, खतौली, गंगेरू, किरवल, कानुनगोन रुड़की, श्यामपुर बाईपास ऋषिकेश, छत्ताजम्बूदास सहारनपुर, वामपुर, छपरोली, नई मण्डी मुजफ्फरनगर, शामली आदि 27 स्थानों पर लगा।

**3. भिण्ड (म.प्र.) :** यहाँ श्री कु.प्र.प्र.सं. उज्जैन द्वारा **श्री कुन्दकुन्द स्वा. मंदिर ट्रस्ट एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 9 से 18 जून तक नवमां सामूहिक जैन बाल संस्कार शिविर** का आयोजन किया गया।

इस सामूहिक बाल संस्कार शिविर में मध्यप्रदेश के भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना जिलों और उत्तरप्रदेश के इटावा, मैनपुरी, फिरोजाबाद, एटा, झाँसी, ललितपुर इसप्रकार 12 जिलों के विभिन्न 76 स्थानों पर बाल संस्कार शिविर लगाया गया।

इस अवसर पर ज्ञानगंगा प्रवाहित करने हेतु श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर में अध्ययनरत 68 व 28 स्नातक विद्वानों, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा से 17, श्री आचार्य धरसेन दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा से 10, श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिर से 4 व ब्र.बहिनों तथा स्वाध्यायी विद्वान 48 - इसप्रकार कुल 175 विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

ग्रुप शिविर के आयोजन हेतु मुख्य रूप से ऐसे ग्रामीण स्थानों का चयन किया गया था, जहाँ आसानी से कोई विद्वान नहीं पहुँच पाता है। सभी स्थानों पर प्रात: सामूहिक पूजन व कक्षायें, दोपहर में सामूहिक कक्षा, सायंकाल कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति, प्रौढकक्षा, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम व जिनवाणी शोभायात्रा, विधान आदि कार्यक्रम कराये गये।

इस अवसर पर 9754 बालक-बालिकाओं एवं 5246 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

तीन दिवसीय इस प्रशिक्षण शिविर में प्रात: सामूहिक पूजन के उपरान्त प्रथम प्रवचन पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं द्वितीय प्रवचन ब्र. रवीन्द्रजी का हुआ। दोपहर में ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को कक्षा निर्देश एवं ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' के प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा शिविर के पाठ्यक्रम का स्पष्टीकरण किया गया।

इस संपूर्ण आयोजन में ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना





के सानिध्य का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को हुआ। **- पुष्पेन्द्र जैन**

**4. नागपुर (महा.) :** यहाँ विदर्भ के 21 एवं महाकौशल प्रान्त के 7 स्थानों पर **दिनांक 2 से 9 जून तक बाल एवं युवा संस्कार शिविर** का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर नागपुर में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आदेशजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित आभासजी जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

बालकों में जैन संस्कार डालने हेतु श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन एवं अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा के 40 विद्वानों ने अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

इस शिविर में 28 स्थानों के 1092 छात्रों एवं हजारों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

**5. उदयपुर (राज.) :** यहाँ नया सर्राफा बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट के 'आओ जानें जैनधर्म' अभियान के अन्तर्गत में दिनांक 9 से 16 जून तक चतुर्थ युवा एवं बाल शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली व ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में विशिष्ट विद्वानों द्वारा 'सम्यग्दर्शन-छहढाला के आधार पर, द्रव्य-गुण-पर्याय तथा चार अभाव' विषयों पर दोनों समय कक्षायें ली गईं। इन कक्षाओं के पूर्व स्थानीय विद्वानों ने महापुरुषों के जीवन, महान ग्रन्थों की विशेषताएं, जैनधर्म के सिद्धान्त व अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला।

सायंकाल 'स्वाध्याय का महत्व एवं आवश्यकता' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका संचालन पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री द्वारा किया गया।

**6. अजमेर (राज.) :** यहाँ वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट पुरानी मण्डी के तत्त्वावधान में 23वाँ ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम में दिनांक 8 से 16 जून तक सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा एवं पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा द्वारा कक्षायें ली गईं। शिविर में 72 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों के आवागमन हेतु बस की व्यवस्था भी की गई। **- प्रकाश पाण्ड्या**

**7. औरंगाबाद (महा.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्नातक परिषद (महाराष्ट्र प्रान्त) द्वारा दिनांक 25 से 31 मई तक तृतीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता, ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना, ब्र. नन्हेभैया सागर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर आदि 15 विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ। शिविर में लगभग 850 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। ●

## विधान एवं गोष्ठी सानन्द संपन्न

**दिल्ली :** यहाँ मधुविहार पटपड़गंज में अहिंसाधाम धर्म संस्थान, आई.पी. एक्सटेन्शन में श्रुतपंचमी महापर्व के अवसर पर दि. 14 से 16 जून तक कविवर राजमलजी पवैया द्वारा रचित श्री दिव्यध्वनिसार विधान एवं जिनवाणी शोभायात्रा का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. योगेशजी अलीगंज, डॉ. सुदीपजी दिल्ली, पण्डित राकेशजी शास्त्री नांगलोई दिल्ली, पण्डित अशोकजी शास्त्री दिल्ली आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 15 जून को दोपहर में आध्यात्मिक गोष्ठी का आयोजन पण्डित अशोजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया। इस गोष्ठी में स्थानीय एवं बाहर के विद्वानों द्वारा **जैनधर्म का इतिहास, चिन्तन व स्वरूप** पर विवेचना की गई।

विधि विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित ऋषभजी एटा, पण्डित समकितजी शास्त्री गुना, पण्डित सुमितजी शास्त्री टीकमगढ एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली के सहयोग से संपन्न हुये। **– नीरज जैन**

## आध्यात्मिक बाल शिक्षण शिविर संपन्न

**भीलवाड़ा (राज.) :** यहाँ सीमन्धर जिनालय कांवाखेड़ा में कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश में बालकों को आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने हेतु दिनांक 16 से 23 जून तक आध्यात्मिक बाल शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर एवं मंगलायतन के विद्यार्थियों द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में लगभग अनेक बच्चों एवं साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर सम्यग्दर्शन कैसे प्राप्त करें, अपने जीवन का उत्थान कैसे करें आदि विषयों पर चर्चाएँ हुई, साथ ही मंगल कलश, भगवान बनो आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। शिविर के अन्तिम दिन बच्चों की मौखिक व लिखित परीक्षा हुई साथ ही पारितोषिक वितरण भी किया गया।





## जैन बालिका संस्कार संस्थान का उद्घाटन संपन्न

**उदयपुर (राज.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट उदयपुर द्वारा बालिकाओं को जैन तत्त्वज्ञान व श्रावकाचार के संस्कारों के साथ उच्च लौकिक शिक्षा प्रदान कराने हेतु जैन बालिका संस्कार संस्थान का शुभारंभ हिरणमगरी सैक्टर 13 में किया गया है। जिसका विधिवत् उद्घाटन दिनांक 29 व 30 जून को किया गया। इस अवर पर पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर के प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने एक भव्य संकुल के निर्माण करने की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि बालिकाओं को संस्कारित किया जाना अत्यावश्यक है। यदि बालिकाएँ संस्कारित होंगी तभी श्रावकाचार जीवित रह सकेगा। अत: सभी को देश के इस दूसरे बालिका संस्थान को भरपूर सहयोग प्रदान करना चाहिये, जिससे संस्थान में अधिक से अधिक बालिकाओं को प्रवेश दिया जा सके। डॉ. मंजुलता जैन कोटा ने आधुनिक युग में संस्कारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

इस वर्ष संस्कार की कक्षा 9 में दिल्ली, उ.प्र., म.प्र. व राजस्थान की 11 बालिकाओं को प्रवेश दिया गया है।

इस अवसर पर डॉ. ममता जैन के निर्देशन में संस्थान की बालिकाओं द्वारा भावभीनी प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की गईं।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

## हार्दिक बधाई

**1. सांगली (महा.)** निवासी ए.ए. पाटील (कन्सल्टिंग इंजीनियर व गवर्नमेन्ट वेल्यूएटर) के सुपुत्र **अभिषेक अण्णासाहेब पाटील** (बी.ई. इलेक्ट्रॉनिक्स) अमेरिका की बफेलो युनिवर्सिटी में मैनेजमेन्ट इन इन्फॉर्मेशन सिस्टम विषय में 'ए क्लास' डिग्री प्राप्त कर उत्तीर्ण हुआ। चि. अभिषेक बागेवाडी गुरुकुल के पूर्व उपाध्यक्ष श्री अण्णासाहेब खेमलापुरे का नाती है।

**2. नई दिल्ली :** यहाँ श्री प्रवीणकुमारजी जैन (अध्यक्ष-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन दिल्ली) की सुपुत्री एवं आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन से उत्तीर्ण आयुषी जैन ने 2012-13 में आयोजित सी.बी.एस.ई. की बारहवीं की परीक्षा में 94.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर बालभारती विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। साथ ही विद्यानिकेतन में भी 93.5 प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि हेतु वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

## दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। **– मंत्री**

पत्राचार का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग,**
**ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015**
**फोन नं.-0141-2705581, 2707458, फैक्स - 0141-2704127**
**E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

## ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

**1. बेलगांव (कर्ना.)** में जैन युवा मण्डल के आग्रह पर दिनांक 12 जून से 22 जून तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर प्रवचनार्थ पधारे।

इस अवसर पर शुद्धात्म सदन हुलबले कॉलोनी शहापुर एवं महावीर भवन हिन्दवाडी में 'जीव जीता कर्म हारा' पुस्तक के आधार पर बन्ध, सत्ता आदि कर्म की दस अवस्थाओं का अध्यात्मगर्भित विवेचन हुआ।

प्रात: एवं सायं दोनों समय लोगों ने अत्यंत जिज्ञासापूर्वक इस विषय को सुना एवं समझा। अधिकांश साधर्मियों ने यह पुस्तक नियमित स्वाध्याय हेतु क्रय की तथा ब्र. यशपालजी के प्रति अत्यंत आभार प्रकट किया। भविष्य में गुणस्थान विवेचन विषय को समझने की भावना भी व्यक्त की।

**2. मलकापुर-बुलढाणा (महा.)** में ब्र. यशपालजी द्वारा दिनांक 23 जून से 2 जुलाई तक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर 'जीव जीता कर्म हारा' पुस्तक के आधार पर बन्ध, सत्ता आदि कर्म की दस अवस्थाओं का अध्यात्मगर्भित विवेचन हुआ। सभी साधर्मियों ने भविष्य में गुणस्थान विवेचन विषय को समझने की भावना भी व्यक्त की।





डेट्रोइट (अमेरिका) में